बाप की श्रीमत होती सदा सुखदायी
देहधारियों के मत होती दुखदायी
उनकी बुद्धि भटकती रहती
जो ईश्वरीय मत पर नही रखते भरोसा
दोनों तरफ पाँव रख खाते फिर धक्का
एक बाप से ही सुनना,उनको ही याद करना
श्रीमत पर पूरा चलना,व्यभिचारी नही बनना
खान -पान की रखनी परहेज़..लोभी नही बनना
अमृतवेले बाप से सर्व सुखों का अधिकारी बन दान करना
हर कार्य में साकार को याद न कर ,एक बाप को ही बनाना साथी
सच्चा साथी,सच्चा मित्र एक बाप न्यारा और प्यारा बनाता
एक बापसे सर्व सम्बन्ध निर्मोही और माया से बचाता
त्रिकालदर्शी और त्रिनेत्री बन माया को जान विजयी बनना

ॐ शांति
मेरा बाबा